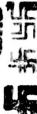


अथ  
**मृतक कर्म विधि**  
(अन्त्येष्टि, अस्थि संकयन, दशगात्र कर्म)

प्रकाशक—

जवाहर बुक डिपो, भारतीय प्रेस  
गुजरी बाजार, मेरठ-२५०००२

मूल्य १ रुपया ५० पैसे



❖ श्री गणेशायनमः ❖

## अन्त्येष्टि संस्कार विधि

दाह विधि, अस्थि संचयन, दशगात्र कर्म

प्राणी अन्त समय आया जान अपना चित्त भगवान में रखे स्नान कर, शुद्ध वस्त्र पहन, नीपी जगह (गोबर से लीपकर) पर कुशा, तिल आदि डाल उस पर सो जावे अथवा पुत्रदि सुला देवें, हरि स्मरण करता हुआ अन्न वस्त्रादि दान करे। प्राणान्त होने पर मुण्डन कराकर स्नान आदि से शुद्ध हो, धौत वस्त्र पहिन, जी के आटे में तिलादि डाल, पांच पिण्ड बनावे। पास में तरबेणा, जल, तिल, यव, दाभ आदि रखे। पांच पिण्डों में से एक शव के पास, दूसरा द्वार पर, तीसरा विश्राम की जगह, चौथा चिता पर, पांचवां हाथ में देवे। कोई-कोई छठा पिण्ड खेचर नाम का रास्ते में भी देते हैं। कांधिये यमगाथा गाते हुए जावें और बिचले बांस से आगे के पीछे और पीछे के आगे हो जावें।

❖ यमगाथा ❖

अहर हन्नीयमानो ग्रामश्वं पुरुषं ।  
गजंवैवस्वतो न तृप्यति सुरया इव दुर्मति ॥



श्मशान में चिता स्थान शुद्ध कर, गोबर लीप, यव, तिल, दाभ, गंगाजल आदि डाल चन्दन अथवा यज्ञ-काष्ठ पलाश (खाखरा) आदि की चिता बना, शव को स्थापन करे। मस्तक नीचे अग्नि चैतन्य कर उसमें ३१ आहुतियों घृत की समन्त्र देवे, पश्चात् परिक्रमा कर चिता के अग्नि लगा दाह करे। कपाल क्रिया कर, दाह कर्म समाप्त कर, स्नान करे, फिर जलोजलि देवे। घर आने पर नीम के पत्ते खावे, भोजन न करे यदि कोई दूसरा बिना मांगे खिलावे, तो अलूना यानी नमक रहित भोजन करे। जैसे यहां कड़वा खाया करते हैं, अस्थि संचयन (दारी) तीसरे दिन अथवा पहिले दिन से बारहवें दिन तक कर सकते हैं। एव-एक पिण्ड नित्य दश दिन देवे अथवा दश इकट्ठे ग्यारहवें को भी दे सकते हैं। अस्थियों को दूध आदि से धोवे फिर श्राद्ध करे। गंगा जी में प्रवेश करे, मरण से दश दिन प्रथम अर्थात् एकादशादि से पहिले ही गंगा जी में प्रवेश करना उत्तम है। वृक्ष पर घट बांध उसमें दूध, जल दान करे जैसे यहां मसानों में दूध उंघाया करते हैं, एकादशादि में नव श्राद्ध, षोडश श्राद्ध और नारायण बलि करते हैं, उसी दिन गऊदान कर वृषोत्सर्ग (केरड़ा-केरड़ी परणावे) करते हैं।

बारहवें में सपिण्डी श्राद्ध करते हैं, पीछे एक वर्ष तक मास-मास सोलह बार श्राद्ध करे,

प्रथम दिन कर्म

३

फिर हर साल दाह तिथि को और आसौज मास कृष्ण पक्ष में श्राद्ध करे। श्राद्ध को पितृ-यज्ञ कहते हैं। यह यज्ञ कई अनाज से और कई तरह से होता है, इस यज्ञ में भोजन, पूजन, पिण्ड, तर्पण होता है। मासिक और संवत्सरी (दाह तिथि) में तो प्रयः एक ब्राह्मण जिमाना चाहिये, इसमें विश्वेदेवा और अग्नौकरण नहीं होता। इसे एकोद्दिष्ट श्राद्ध कहते हैं, बाकी श्राद्धों में पांच ब्राह्मण बैठाते हैं। इसे पार्वण श्राद्ध कहते हैं। इसमें पिता, दादा, परदादा, माता, नाना, परनाना, नानी, परनानी आदि का आह्वान करते हैं किन्तु तीर्थ और महालय में नाना गोत्र के पित्रों का आह्वान, आसन, पूजन करते हैं। पिण्ड हर एक के नाम से अलग-अलग दें। इन सब पित्रों का आह्वान इस प्रकार करें। दो ब्राह्मणों को पूर्व में बैठाकर उनमें विश्वेदेवा का आह्वान करे, तीन ब्राह्मण उत्तर मुख बैठाकर उनमें से प्रथम में तीन पिता आदि तीन माता आदि यों छहों का दूसरे में नाना आदि और नानी आदि छहों का, तीसरे में स्त्री, पुत्र, काका, मामा, भाई, बुआ, मौसी, बहिन, बेटी, गुरु, मित्र आदि का आह्वान करे।

पुरुषों की जगह सस्त्री और सुपुत्र सस्त्री बोले और स्त्री की जगह सभर्ता पुत्र सस्त्री पुत्र बोले। श्राद्ध कर्म में न्यौता अपसव्य से देवे फिर चरण धुलाय, आसन पर बिठाय,

आह्वान, आसन, अर्घ्य देवे, पीछे पूजन गन्ध आदि से कर अग्नौकरण कर भोजन करा पिण्ड दान करे, पीछे उत्तर पूजन कर दक्षिणा देकर आर्शीवाद मांगे, ब्राह्मण गण जब आशीष दें तो उसे ग्रहण कर ब्राह्मणों को ताम्बूल दे श्राद्ध समाप्त करे, दुर्मरण में अर्थात् पञ्चक में अथवा विष, सर्प आदि से मृत्यु हुई होवे, तो नारायण बलि अवश्य करे इस कर्म में यानी नारायण बलि में पंच देवों का आह्वान; स्थापन, पूजन, हवन, तर्पण आदि कर्म होता है, यह कर्म प्रायः हर मृत्यु में कराते हैं।

### प्रथम दिन कर्म

**प्रथम क्षौरं कर्त्यम्**—कर्म करने वाला पहले क्षौर (हजामत) करावे।

**(ततः स्नानम्)** फिर स्नान करके अंगोछे से शरीर को पूछ कोरी धोती कर, करवे से एक हाथ से पानी भरे। फिर घर पर आकर तिल घी गगाजल मिला जौ के आटे के छः पिण्ड बनावे और उसी पानी से मृतक को स्नान करावे छः पिण्ड देने की रीति

**(स्थान पिण्डः)** पंडित एक पिण्ड जहाँ मुर्दा बाधा जावे वहाँ पर दिलावे।

**अपसव्या भूत्वा**—अपसव्य होके संकला करो।

### प्रथम दिन कर्म

५

**अद्यामुकगोत्रः शव नाम प्रेत एषः ब्रह्म दैवतः स्थान पिण्डस्ते मया दीयते तवोपरि प्रतिष्ठितम् ॥१॥**

**(पुनर्द्वारे स्थाप्यः)** दूसरा पिण्ड घर के बाहर दिलवावे। संकल्प करे।

**अद्यामुक गोत्रः पांथ नाम प्रेत एषः विष्णु दैवतो द्वार पिण्डस्ते मया दीयते तवोपरि प्रतिष्ठितम् ॥२॥**

**(मार्ग मध्ये चत्वरं स्थाप्य)**

तीसरा पिण्ड नगर के बाहर चौराहे में दिलवावे। संकल्प करे।

**अद्यामुकगोत्रः खेचर नाम प्रेत एषः रुद्रदैवतः चत्वरस्थले पिण्डस्ते मया दीयते तवोपरि प्रतिष्ठितम् ॥३॥**

**विश्राम पिण्डं कुर्यात्—**





पर्यग्नि करणम्-अग्नि को बाले ।

क्रव्यादि मुखेभ्यो देवेभ्यो नमः तिलान् भूमौ क्षिपेत्-

क्रव्यादि इस मन्त्र को पढ़के पृथ्वी में तिल के दाने छोड़दे ।

घृतेनाहुतिं जुहुयात्-घी की आहुति दे, पंडित ये स्वाहा बोलता जाय ।

ॐ लोमेभ्यः स्वाहा १ त्वचेभ्यः स्वाहा २ लोहिताय स्वाहा  
३ मेदेभ्यः स्वाहा ४ मांसेभ्य स्वा १ ५ स्नायुभ्यः स्वाहा  
६ स्वभ्यः स्वाहा ७ मज्जाभ्यः स्वाहा ८ तपसे स्वाहा  
९ वायवे स्वाहा १० अपासाय स्वाहा ११ प्रजासाय स्वाहा  
१२ संजासाय स्वाहा १३ विपासाय स्वाहा १४ हौ द्यौसाय  
स्वाहा १५ शुचये स्वाहा १६ शोचते स्वाहा १७ शोचमा-

प्रथम दिन कर्म

नाय स्वाहा १८ शोकाय स्वाहा १९ तपते स्वाहा २०  
तप्यमानाय स्वाहा २१ तप्ताय स्वाहा २२ धर्माय  
स्वाहा २३ निष्कृत्यै स्वाहा २४ प्रायश्चित्त्यै स्वाहा २५  
भेषजायै स्वाहा २६ (ततोऽपसव्यं पंचप्रेतमुखे जुहुयात्)

अपसव्य होकर पांच आहुति मुँह के मुँह में गेरे ।

यमाय स्वाहा १ मृत्यवे स्वाहा २ अन्तकाय स्वाहा ३  
ब्रह्मगोष्ठ्यै स्वाहा ४ ब्रह्महत्यायै स्वाहा ५

फिर जलती हुई अग्नि हाथ में लेके दक्षिण को मुँह करके ये मन्त्र पढ़े ।

मन्त्र-ॐ कृत्वा सुदुष्कृत कर्म जानता वाप्यजानता । मृत्यु-  
कालवशं प्राप्य नरं पंचत्वमागतः ॥१॥ धर्माधर्म समायुक्तः

लोभ मोह समावृतः ॥ दहेयं सर्वगात्राणि दिव्यान् लोकान्  
स गच्छतु ॥२॥

फिर जलती हुई अग्नि जो हाथ में है उसके सहित चिता की परिक्रमा करके जलती हुई अग्नि को सिर की तरफ लगादे ।

ततः कपालक्रियां कृत्वा—फिर अर्ध दाह होने पर कपाल क्रिया करे । बांस लेकर मुर्दे के सिर में तीन बार मारे जिससे खोपड़ी फूट जावे फिर उसमें घी छोड़े ।

(प्रादेशमात्रं सप्त काष्ठैः सह प्रदक्षिणक्रमेण सप्तकाष्ठिका-  
मग्नौ क्षिपेत्)

फिर सात लकड़ी एक बिलांद की बराबर लेके चिता की सात परिक्रमा करे और सिर की तरफ आकर एक-एक लकड़ी चिता में छोड़ता जाय और ये मन्त्र पढ़ता जावे ।

मन्त्र—ॐ क्रव्यादमग्निं प्रहिणोमि दूरं यमराज्यं गच्छतु  
रिप्रवाहः । इहैवायमितरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं चददत्तप्रजा

नयत् स्वाहा (ग दमुच्चार्यम्) क्रिया करने वाला मृतक को स्मरण कर रोवे ।

भस्म पिण्डं दत्वा—छटा पिण्ड भस्मी में दे । संकल्प करे ।

अद्यामुक् गोत्र अमुक नाम प्रेत एषः यम किंकर दैवतः  
कुक्षि पिण्डस्ते मया दीयते तवोपरि प्रतिष्ठताम् ।

(ततः सर्वेजनाः स्नात्वा तिलांजलिं द्यूः)  
तिल तोयांजलि मया दीयते तवोपरि प्रतिष्ठतम् ।

फिर सब सज्जन स्नान करके तिल जल में डाल अञ्जली देवें गोत्री तीन तिलांजली देवें और सब एक तिलांजलि दें ।

(पंचक मरणेतु पंचपुत्तलाः कार्याः)

पंचकों में मरे तो पांच कुशा के पुतले बनावे, कलावा लपेट कर फिर पांचों को निम्न मन्त्र पढ़कर मुर्दे के धोरे घरे इस क्रम से ।

मन्त्र-ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि  
सहस्रधारम् । देवस्त्वासविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारे-  
सुप्त्वा कामधुक्षः ॥१॥

(इति मन्त्रेण शिखायां पूतलं स्थापयेत् )

इस मन्त्र से चोटी में पहिला पुतला धरे ।

(प्रेत सखाय नमः) ऐसा भी कहे ।

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसज्जनीस्थो वरुणस्य  
ऋत सदन्नय सिवरुणस्य ऋत सदनमसि वरुणस्य ऋत  
सदनमासीद ॥२॥ इस मन्त्र से दूसरा दाहिनी कोख में धरे (प्रेत वाहवेनमः)

ॐ उतनो हवुर्धन्यः शृणोत्व ज एक पात्पृथिवी समुद्रः । विश्वे-

देवा ऋतावृधो हुवानास्तुता मन्त्राः कविशस्ता अवन्तु ॥३॥

(अनेन मन्त्रेण वामकुक्षौ स्थापयेत्)

इस मन्त्र से तीसरा बाई कोख में धरे । (प्रेत पायनमः)

ॐ शिवोनामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मामा-  
हिष्साः । निवर्तयाम्यायुपेन्ना द्यायप्प्रजननायरायुस्पीपाय-  
मुप्प्रजास्त्राय सुवीर्याय ॥४॥

(अनेन मन्त्रेण नाभौ स्थापयेत्) इस मन्त्र से चोथा नाभि में रखे ।

(प्रेतभूमिपायनमः) पाँचवां पुतला ले ।

मन्त्र-ॐ पूषन्तव व्रते वयन्नरिष्येम कदाचन ।

स्तोतारस्तऽईहस्मसि ॥५॥



(अनेन मंत्रेण पादमध्ये स्थापयेत्)

दोनों पैरों के बीच में इस पुतले को धरे । (प्रेतहर्त्रे नमः)

(अग्निमध्ये पंच आहुतिर्दद्यात्) पांच आहुति अग्नि में दे ।

ॐ प्रेतवाहवे स्वाहा १ ॐ प्रेतसखाय स्वाहा २ ॐ प्रेतपाय स्वाहा ३ ॐ प्रेतभूमिपाय स्वाहा ४ ॐ प्रेतहर्त्रे स्वाहा ५ इति ॥

(निशामुखे दुग्धं दद्यात्)

सन्ध्या समय चौराहे में दूध धरे स्नान कर कर्म की धोती पहन अंगोछा बायें कन्धे पर रख पूर्व को मुख करके (शान्ताकारं भुजंगशयनं) ये श्लोक पढ़ें । फिर अपसव्य हो दक्षिण को मुख कर तीन लकड़ियों की दो त्रिकुटी बनाके एक पर जल भर कर कच्चा ढोकसा धरे दूसरी पर दूध से भर कर कच्चा ढोकसा धरे उन्होंने तिल गेर कर संकल्प करे ।

अद्यामुक्तोत्रस्यामुक्तनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्ट-

प्रथम दिन कर्म

१५

लोकावाप्त्यै प्रथमदिने निशामुखे चत्वरस्थले रज्जुवद्ध-  
काष्ठोपरि नीरक्षीरसंयुक्तमपक्वमृण्मयपात्रद्वय दाहजनित-  
तृषानिवारणार्थं स्नानपानार्थं च ते मया दीयते  
तपोप्रतिष्ठताम् ।

लोटे का जल अंगूठे की तरफ को छोड़ दे हाथ जोड़कर ये मन्त्र पढ़ें ।

श्मशानानलदग्धोसि परित्यक्तोसि बाधवैः । इदं नीरमिदं  
क्षीरमत्रस्नाहि इदं पिव ॥

फिर सव्य हो पूर्व को मुख करके ये दोनों मात्र पढ़ें ।

ॐ अनादिनिधनोदेवः शंखचक्रगदाधरः । अक्षयः पुण्डरी-  
काक्षः प्रेतमुक्तिप्रदो भव ॥१॥ अतसी पुष्प संकाशं पीतवास  
समन्वितम् । धर्मराजनमस्त्वांवैप्रेतमोक्षप्रदोभव ॥२॥



(विष्णवेनमः त्रिवारं पठेत्) इसको भी तीन बार उच्चारण करे ।

॥ इति प्रथम दिन कर्म समाप्तम् ॥

अस्थि संचयन कर्म.

तृतीयदिने अस्थिसंचयं कुर्यात्—तीसरे दिन मुद्गघाट में जाकर चिता में से हड्डियाँ चुगने का कार्य करे, स्नान करके कर्मे की धोती पहने, बायें कन्धे पर अंगोछा रखे और पूर्व को मुंह करके बैठे दोनों हाथों में कुशा की पवित्री पहने । इस मन्त्र को पढ़े—  
दौदभौ दक्षिणे हस्ते सव्ये त्रीण्यासने तथा । पादमूले  
शिखायान्तु सकृच्चक्षोपवीतके ॥१॥

सीधे हाथ की कनकी अंगुली के पास की अंगुली में कुशा की पवित्री पहने, तीन पवित्री कुशा की बायें हाथ की कनकी अंगुली के पास की अंगुली में पहने । एक कुशा पैरों के नीचे, एक सीधी सांड में, एक अंगोछे में और एक चोटी में धर ले ।

अस्थि संचयन कर्म

घृतेन रक्षादीपम्- रक्षा के लिये घी का दीवा बाले ।

चाित समीपे भूमिं प्रोक्ष्य- चिता के पास पृथ्वी पर जल छिड़के यह मंत्र पढ़े—  
अयोध्या मथुरा माया काशी कांची हवन्तिकापुरी द्वारा-  
वती ज्ञेयाः सप्तैता मोक्षदायकाः ॥

विष्णुं ध्यायेत्—हाथ जोड़ कर विष्णु भगवान का ध्यान करे । श्लोक—

ॐ शान्ताकारं भुजंगशयनं पद्मनाभं सुरेशं, विश्वाधारं  
गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम् । लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं  
योगिमिदर्यान गम्यम्, वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैक  
नाथम् ॥१॥ शंख चक्रधरं देवद्विभुजं पीतवाससम् प्राग्भवे  
कर्मणां विप्र पुण्डरीकं स्मरेद्भस्मि ॥२॥

श्री विष्णवे नमः त्रिवारं पठेत्—इसको तीन बार पढ़े ।

प्रतिज्ञा संकल्पं कुर्यात्—जल, चावल, मोटक लेकर अस्थि जुगने का संकल्प करे ।

अथ पूर्वोक्तगुणविशिष्टायां अमुकायनेकं अमुकराशिस्थिते  
भास्करे मासानां मासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे  
अमुकतिथौ अमुकवासरान्वितायां यथा नक्षत्रयोगकरण  
मुहूर्तान्वितायां अमुकगोत्रोऽहं अमुक शर्माहं अमुक  
गोत्रस्यामुकनामप्रेतस्य प्रतत्त्वविमुक्तये ऽभीष्टलोका वाप्तये  
तृतीयेदिने अस्थिसंचयन महं करिष्ये ॥

अपसव्यं दक्षिणाभिमुखः—अपसव्य होकर दक्षिण दिशा को मुंह करे ।

पलाशपात्रं विधाय—अपने सामने पृथ्वी में एक हाक का पत्ता ऊपर नीचे धरे ।

अस्थि संवचन कर्म

१९

कुशासनं गृहीत्वा—फिर हाथ में कुशवट, जल, तिल लेकर संकल्प करे ।

अयामुकगोत्रस्यामुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्ट  
लोकावाप्तये तृतीये दिने अस्थिसंचयनकर्मणि इदं कुशासनं  
ते मया दीयते तवोप्रतिष्ठताम् ॥ पवित्रं दक्षिणाग्रं धृत्वा-

दक्षिण को अग्र भाग करके पवित्री ऊपर के पक्ष पर धरे ।

पुटपात्रं संस्थाप्य—एक बोना बही धरे । उसमें पवित्री छोड़े ।

मन्त्र—ॐ पवित्रोऽथो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसवउत्पुनाम्यच्चिद्रेण  
पवित्रेण सूर्यस्परश्मिभिः ॥१॥ उस बोने में जल भरे ।

मन्त्र—ॐ शन्नोदेवीरभीष्टय आपोभवन्तु पीतये । शंय्यो-  
रभिरुदन्तुनः ॥१॥ तिल भरे ।

मन्त्र-ॐ तिलोसिसोमदैवत्यो गोसवोदेवनिर्मितः । प्रयत्नमद्भिः  
पृक्तः स्वययापितृन् लोकान् प्रणाग्निः ॥१॥

गंधपुष्पाणि च तूष्णींक्षिपेत्-उसमें बिना बोले चन्दन चूरा, फूल, रोली छोड़ दे ।  
ततो ऽर्घपात्रं वामहस्ते धृत्वा-उस दोने को दायें हाथ से उठाकर बायें हाथ  
में रखले । उस दोने में से पवित्री निकाल कर—

पवित्रामन्त्रपात्रोपरि उत्तराग्रं धृत्वा-पवित्री अन्न पात्र के ऊपर उत्तर को  
अगला भाग करके रखदे ।

तदुपरि किंविदुदकान्तरं दत्वा-कुशा जल में भिगोकर पवित्री पर छोटे लगावे ।  
दक्षिणपाणिना संपुटितंविधाय-सीधे हाथ को दोने पर उल्टा रखकर मंत्र पढ़े ।

मन्त्र-ॐ या दिव्या आपः पयसासंबभूवुर्था अंतरिक्षा उत  
पार्थिवीर्याः हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तान आपः शिवास्य स्योनाः

सुहवा भवन्तु । उस दोने को सीधे हाथ में लेकर संकल्प करे ।

अद्य मुक गोत्रस्यामुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्ट  
लोकावप्तये तृतीये दिने अस्थिसंवयनश्राद्धे षहस्तार्घस्ते  
मया दीयते तवोपतिष्ठताम् । उस दोने का थोड़ा सा जल कुशाबट से  
ब्राह्मण के ऊपर छोड़ दे ।

अर्घ्येपुनः प्रत्यर्घमस्तुवामपार्श्वे न्युब्जीकुर्यात्-उस दोने में से वह  
पवित्री निकालकर जो नीचे के पत्ते पर घरी है इस दोने में डालकर बाईं तरफ उल्टा रखदे ।

गन्धादिदानम्-ऊपर के पत्ते पर चन्दन का चूरा, पान, सुपारी, तिल, पुष्प, मीठा ये  
सब सामग्री बड़ाकर एक धी की बत्ती बाले, धूप दे और संकल्प करे—

ॐ अद्यामुकगोत्रस्यामुकनाम प्रेतस्य कुशाबट ब्राह्मणोपरि  
एतानि गन्ध पुष्प धूप दीप नैवेद्यतांबूलपुगीफलादीनि ते मया

दीयन्तेतवो प्रतिष्ठन्ताम् ।

चतुष्कोणे मण्डलं कुर्यात्—हाथ में जल लेकर उस पत्ती के चारों तरफ गेर दे ।

मन्त्र—यथाचक्रा युधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षतु एतन्मंडलतो  
यागं सर्वभूतानि रक्षतु ॥१॥

अन्नं सजलं परिवेश्य—एक दोने में अन्न और एक दोने में जल भर कर उसके  
पास रख कर संकल्प करे—

अद्यामुकगोत्रस्यामुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तये अभीष्ट  
लोकावाप्तये तृतीये दिने इदमन्नोदकं ते मया दीयते तवो  
प्रतिष्ठताम् ।

वेदिकां कृत्वा जलेन प्रोक्षणमंत्रपठेत्—मिट्टी की वेदी बनावे और उस पर  
जल छिड़ककर यह मन्त्र पढ़े ।

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची ह्यवंतिका । पुरी द्वारा-  
वती ज्ञेयाः सप्तैता मोक्षदायका ॥१॥

अपहतेति रेखाकरणम्—वेदी पर बायें हाथ का अंगूठा और तर्जनी रखकर कुशा  
की जड़ से लकीर खींचे—

मन्त्र—अपहता असुरारक्षा ॐ सिवेदिषदः । तान् कुशान्  
ऐशान्यां दिशि क्षिपेत्—उन कुशाओं को ईशान दिशा में फेंक दे ।

कुशासनम्—एक कुशा लेकर आसन के लिये संकल्प करे ।

मन्त्र—अद्यामुकगोत्रस्यामुकनाम प्रेतस्य ० अस्थिसंचयन श्राद्धे  
पिंडस्थाने इदं कुशासनं ते मया दीयते तवोप्रतिष्ठताम् ।

वह कुशासन वेदी की लकीर पर रखे । अर्चने जलम्—दोने में जल भरके संकल्प करे ।



**मन्त्र-अद्यामुकगोत्रस्यामुकनाम प्रेतस्य० पिण्डस्थाने कुशो-  
परिप्रत्यवनेजलं ते मया दीयते तवोप्रतिष्ठताम् ।**

इस दोने का जल कुशा के ऊपर चढ़ाकर अपने आगे रख ले ।

**पिण्डदानम्-**पिण्ड लेकर उसके ऊपर कुशा रख कर संकल्प करे ।

**मन्त्र-अद्यामुकगोत्रस्यामुकनाम प्रेतस्य० एषः पिण्डस्ते मया  
दीयते तवोप्रतिष्ठताम् ।**

पिण्ड वेदी की कुशा के ऊपर रख दे ।

**(प्रत्यवने जलम्)** वह जो दोना आगे धरा है उसमें जल भर कर संकल्प करे ।

**मन्त्र-अद्यामुकगोत्रस्यामुकनाम प्रेतस्य० पिण्डोपरिप्रत्यवने  
जलं ते मया दीयते तवोप्रतिष्ठताम् ।**

उसका जल पिण्ड के ऊपर चढ़ा दे ।

**(गंधादिदानम्)** एक पान पर सब सामग्री रख कर पिण्ड के ऊपर चढ़ावे, घी की  
बत्ती बाल कर संकल्प करे ।

**मन्त्र-अद्यामुकगोत्रस्यामुकनाम प्रेतस्य० पिण्डोपरि एतानि  
गंधादीनि ते मया दीयते तवोप्रतिष्ठताम् ।**

**(अन्नोदकम्)** एक दोने में अन्न और एक दोने में जल भर कर पिण्ड के पास धरे ।

**अद्यामुक गोत्रस्यामुक नाम प्रेतस्य० क्षुधातृषाशान्तये  
पिण्डाग्ने इदमन्नोदकं ते मया दीयते तवोप्रतिष्ठताम् ।**

**(सव्यं पूर्वाभिमुखः दक्षिणासंकल्पम्)** पूर्वाभिमुख सव्य होकर दक्षिणा ले ।

**अद्यामुकगोत्रस्यामुकनाम प्रेतस्य० पिण्ड प्रतिष्ठार्थं ताम्रमर्क  
दैवतं यथानामगोत्राय महाब्राह्मणाय संप्रददे ।** महाब्राह्मण को दे दे ।



(स्वस्ति) महाब्राह्मण ऐसा कहे । (प्रार्थना) हाथ जोड़े ।

अनादिनिधनो देवः शंखचक्र गदाधरः । अक्षय पुण्डरीकाक्षः  
प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥१॥ अतसीपुष्पसंकाशं पीतवाससमन्वित ।  
धर्मराज नमस्तुभ्यं प्रेतमोक्ष प्रदो भव ॥२॥

(अपसव्यमच्छिन्नजलधाराम्) अपसव्य होकर जल बढ़ाने का संकल्प करे ।  
अद्यामुकगोत्रस्यामुक नाम प्रेतस्य० पिण्डोपरि एषाच्छिन्न  
जलधारा ते मया दीयते तवोप्रतिष्ठताम् ।

पिण्ड के ऊपर जल की धारा बढ़ादे ।

(पिण्डविसर्जनम्) पितर का ध्यान कर ऐसा कहे कि आप जाइये ।

इह लोके परित्यज्य जातोसि परमांगतिम् । मनसा वायुरूपेण

आत्मा संवयनं कम्

५७

कशेत्वां योजयांम्यहम् ॥१॥

(कुशासनं संचालय) पिण्ड के नीचे की कुशा खींच ले ।

(संव्यमावम्य) संव्य हो आचमन करके जल चानल ले संकल्प करे ।

अद्यामुकगोत्रस्यामुक नाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽभीष्ट  
लोकावाप्यते तृतीये दिने अस्थिसंचयनश्राद्धे प्रेतस्योपकाराय-  
श्मशानवासिनां पूजामहं करिष्ये ।

(ततश्चितां परितोदिशम्) चिता के चारों ओर (अष्टक्रव्यादि  
देवेभ्योनमः) पूर्व से लेकर आठों दिशाओं में जल का छींटा लगावे उन पर ८ टाक के  
पत्ते धरे । उन पर पुष्प, पान, सुपारी, कमलगट्टे, मिठाई आदि रखकर आठों जगह दोनों  
में जल भर कर घरदे फिर धूप दे और ८ बी के दीपक बाले ८ पैसे बढ़ावे ।

(अष्ट बलिदानम्) ये ८ बलिदान हैं । (प्रार्थनामन्त्रः) हाथ जोड़कर ये  
मन्त्र पढ़े ।

मन्त्र-येस्मिन् श्मशानेदेवा स्युर्भगवन्तः समातनाः । ते स्मत्सकाशाद् गृह्णन्तु बलिमष्टां भक्षयन् ॥१॥ प्रेतस्यास्य शुभोल्लोकान् प्रयच्छन्तु च शाश्वतान् । अस्माकमायु-  
रारोग्यं सुखं च दधतां वरम् ॥२॥ एवं कृत्वा बलान् सर्वान् क्षीरेणाभ्यर्च्य वाग्यतः । बलिभक्षदीपं पश्यममगृहे सर्वं रक्ष  
रक्ष ॥३॥

आठों बलियों पर दूध चढ़ाकर यह कहे कि बलि को भक्षण करो, दीपक को देखो मेरे घर में सम्पूर्ण जनों की रक्षा करो ।

विमर्जनं तु देवानां कर्तव्यं तु समाहितेन) सावधान होकर सब देवताओं का विसर्जन करे । आप जाइये ।

(क्षीरेण चिता प्रोक्षय) अब दूध से सारी चिता पर छींटा लगावे ।

(अग्निमुदकेन समाप्य) अग्नि को जल से ठण्डी करके—

(जंडशाखाया शिरोस्थि उत्थाय) जांडकी लकड़ी से शिरकी हड्डी को किरोले ।

(अंगुष्ठानामिकायाभ्यामादाय) अंगूठे और अनामिका अंगुली से उठा कर सराई या तांबे के पात्र में रखकर—

(क्षीरमध्ये निक्षिप्य) दूध से स्नान कराकर फिर गंगाजल से स्नान करावे ।

(सुवर्णपीतवस्त्रेण वेष्टयित्वा) सोना चढ़ाकर पेला रेशमी कपड़ा उढ़ाकर—

(भांडमध्ये संस्थाप्य) उस सराई को मिट्टी के पात्र में या कपड़े की कोथली में धरकर दूध गंगा जल छिड़के और उस पर सब सामग्री चढ़ादे, चारों खूंटों पर ४ कीलें गाड़ कर कच्चे तागे से सात या पांच तार पूरदे, समाधी सी बनादे फिर महाब्राह्मण को भोजन कराकर दक्षिणा दे और उन अस्थियों को गंगा जी में छोड़ दे ।

## (अस्थि छोड़ने का महात्म्य)

**श्लोकः—**यावदस्थिमनुष्याणां गंगातीर्थेषु तिष्ठति ।

तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते ॥१॥

अर्थ—जब तक मनुष्य की हड्डियां गंगा के तीर्थ पर रहती हैं तब तक वह व्यक्ति स्वर्गलोक में आदर पाता है ।

**श्लोकः—**दशाहाभ्यन्तरे यस्य गंगातोयेषु भजति ।

गंगायां मरणे याद्रक् ताद्रक् फलमवाप्नुयाम् ॥

अर्थ—जितना यश मनुष्य की हड्डियां गंगा जल में डूबे रहने का होता है उतना ही फल गंगा के तट पर मरने का होता है ।

**अस्थि संचयन कर्म सामग्री—**कुशा के आसन ९, घड़िये २, सुपारी १५, कुशा, कपड़े की कोथली १, धूप ४ आने की, कुशा की पवित्री २, पीली मिट्टी या बालू रेत, आटा पिण्ड बनाने की १ पाव, कुशवट २, चावल १ पाव, वैसे २५, कुशा मोटक का १, तिल १ छटांक, कमल गट्टे १०, घी का दीपक १, ढाक के पत्ते १०, दूध १ छटांक, रुई, ढाक के दोने १०, जांड की लकड़ी १, दियासलाई १, फूल १ छटांक, सराई ४, गंगा जल, हार ५, रेखमी कपड़ा जरासा, थाली १, चन्दन चूरा १ छटांक, सोना जरासा, लोटा जल का १, बताजे ४ आने के, महाब्राह्मण को भोजन, कटोरी १, पेड़े २, घी १ छटांक, पान २ ।

## दशगात्र कर्म

**अश्वत्थ समीपे वेदिकां कृत्वा—**पाधा पीली मिट्टी की वेदी पीपल के नीचे बनावे फिर स्नान करके कर्म की धोती पहन लेवे फिर घड़िया में पानी भरके उसमें थोड़ा सा गंगा जल, तिल, घी, दूध डाले और वेदी के पास बंटे, फिर जो का आटा थाली में लेकर उसमें तिल, घी, दूध, मोठा गंगाजल डालकर घड़िया के जल से मांडे और उसके छः भाग करे, एक बड़ा गोल पिण्ड, एक छोटा गोल पिण्ड, एक पेड़ा, जो एक मुट्ठी, एक दीवा बाकी भोजन के लिये रखले, अब अगोछा जनेऊ बायें कन्धे पर करे, सब पिण्ड की सामग्री पास धरे, फिर दो कुशा की पवित्री सीधे हाथ की कन की अंगुली के पास की अंगुली (तर्जनी) में पहने और तीन कुशा की पवित्री उल्टे हाथ की कन की अंगुली के पास की अंगुली में पहने, एक कुशा जड़ समेत पैरों के नीचे धरे, एक चोटी में, एक अंगोछे में, एक सीधी अन्टी में रखकर ये मन्त्र पढ़े—

दौदभौं दक्षिणे हस्ते सव्ये त्रीणिकुशां तथा ।

पाद मूले शिखायांतु सकृद्यज्ञोपवीतके ॥१॥

## (अस्थि छोड़ने का महात्म्य)

**श्लोकः—**यावदस्थिमनुष्याणां गंगातीर्थेषु तिष्ठति ।  
तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते ॥१॥

अर्थ—जब तक मनुष्य की हड्डियां गंगा के तीर्थ पर रहती हैं तब तक वह व्यक्ति स्वर्गलोक में आदर पाता है ।

**श्लोकः—**दशाहाभ्यन्तरे यस्य गंगातोयेषु भजति ।  
गंगायां मरणे याद्रक् ताद्रक् फलमवाप्नुयाम् ॥

अर्थ—जितना यश मनुष्य की हड्डियां गंगा जल में डूबे रहने का होता है उतना ही फल गंगा के तट पर मरने का होता है ।

**अस्थि संचयन कर्म सामग्री—**कुशा के आसन ९, घड़िये २, सुपारी १५, कुशा, कपड़े की कोथली १, धूप ४ आने की, कुशा की पवित्री २, पीली मिट्टी या बालू रेत, आटा पिण्ड बनाने की १ पाव, कुशवट २, चावल १ पाव, वैसे २५, कुशा मोटक का १, तिल १ छटांक, कमल गट्टे १०, घी का दीपक १, ढाक के पत्ते १०, दूध १ छटांक, रुई, ढाक के दोने १०, जांड की लकड़ी १, दियासलाई १, फूल १ छटांक, सराई ४, गंगा जल, हार ५, रेखमी कपड़ा जरासा, थाली १, चन्दन चूरा १ छटांक, सोना जरासा, लोटा जल का १, बताणे ४ आने के, महाब्राह्मण को भोजन, कटोरी १, पेड़े १, घी १ छटांक, पान २ ।

## दशगात्र कर्म

**अश्वत्थ समीपे वेदिकां कृत्वा—**पाधा पीली मिट्टी की वेदी पीपल के नीचे बनावे फिर स्नान करके कर्म की घोंती पहन लेवे फिर घड़िया में पानी भरके उसमें थोड़ासा गंगा जल, तिल, घी, दूध डाले और वेदी के पास बंटे, फिर जो का आटा थाली में लेकर उसमें तिल, घी, दूध, मोठा गंगाजल डालकर घड़िया के जल से मांडे और उसके छः भाग करे, एक बड़ा गोल पिण्ड, एक छोटा गोल पिण्ड, एक पेड़ा, जो एक मुट्ठी, एक दीवा बाकी भोजन के लिये रखले, अब अगोछा जनेऊ बायें कन्धे पर करे, सब पिण्ड की सामग्री पास धरे, फिर दो कुशा की पवित्री सीधे हाथ की कन की अंगुली के पास की अंगुली (तर्जनी) में पहने और तीन कुशा की पवित्री उल्टे हाथ की कन की अंगुली के पास की अंगुली में पहने, एक कुशा जड़ समेत पैरों के नीचे धरे, एक चोटी में, एक अंगोछे में, एक सीधी अन्टी में रखकर ये मन्त्र पढ़े—

दौदभौं दक्षिणे हस्ते सव्ये त्रीणिकुशां तथा ।  
पाद मूले शिखायांतु सकृद्यज्ञोपवीतके ॥१॥



(पुनः आत्म शरीरे पिंड वस्तु कुश पवित्रेण जलम् प्रोक्षः)

इसके बाद अपने ऊपर को और पिंड की सारी सामग्री पर कुशा के पवित्र से नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर जल का छीटा लगावे—

ॐ अपवित्रः पवित्रोवा सर्वाऽवस्थांगतोपिवा ।

यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सवाह्यभ्यन्तरः शुचिः ॥२॥

अंगोछा जनेऊ बायें कन्धे पर कर पूर्व की ओर मुंह करके दोनों हाथ जोड़कर इस मन्त्र से विष्णु भगवान का ध्यान करे—

शंखचक्रधरं देवं द्वभुजं पीतवाससं । प्रारम्भे कर्मणा विप्र  
पुण्डरीकाक्षं स्मरेद्धृदि ॥३॥ ॐ शान्ताकारं भुजंगशयन  
पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम् ।  
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं

मयर्हं सर्वलोकैक नाथम् ॥४॥

प्रतिज्ञा संकल्पम्—घड़िया में से जल लेकर पहिला संकल्प करे ।

ॐ तत्सद्विष्णुर्विष्णुर्विष्णु ऽद्योनमः परमात्मने श्री पुराण  
पुरुषोत्तमाय अथ श्री ब्रह्मणोन्नि द्वितीय प्रहरार्द्धे श्री श्वेत  
वाराह कल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मवर्तेक  
देशे पुण्य क्षेत्रे वर्तमान सम्वत्सरे अमुकायने भास्करे  
मासानां मासोत्तमे मासे ऽमुकमासे ऽमुकपक्षे ऽमुकतिथौ  
ऽमुकवासरे ऽमुकगोत्रोहं ऽमुकनाम शर्माहं ऽमुकगोत्रस्य  
ऽमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये ऽमीष्ट लोकावाप्तये शरीरा  
ऽव्यवनिष्पत्तये प्रथम दिननिमित्तक रौरव नाम नरकोत्तारणाय

ब्रह्मरूपाय मूर्द्धा सम्भृत्यै प्रथम पिण्डदानमहं करिष्ये ॥१॥

संकल्प का जल सीधी अंगुलियों पर को जमीन पर छोड़ दे ।

अपसव्यं दक्षिणाभिमुखः पानित्वामजनुः वेदिका प्रोक्षः-

अंगोच्छा, जनेऊ सीधे कन्धे पर करके दक्षिण को मुंह करके बायां घोंटा निबाकर वेदी पर घड़िया में से नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर जल छिड़के—

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची ह्यवन्तिका ।

पुरी द्वारावती ज्ञेया सप्तैता मोक्ष दायकाः ॥५॥

अपहतेति रेखा कर्ण—बायें हाथ का अंगूठा और उसके पास की अंगुली वेदी पर फँलाकर कुशा लेकर जड़ की तरफ से इस मन्त्र से लकीर खींचे—

अपहता असुरा रक्षा शिवेदिषदः ।

तान् कुशान् ऐशान्यां दिशित्यजेत्—उस कुशा को ईशान कोण में रख दे ।

दशगात्र कर्म

कुशासनसंकल्प—फिर जड़ समेत कुशाजल लेकर संकल्प करे ।

अद्यामुक गोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य प्रेतत्वविमुक्तते अभिष्टः ।  
प्रथम दिननिमित्तक पिंडस्थाने इदं कुशासनं ते मया दीयते  
तवोपतिष्ठताम् ॥

हाथ की कुशा वेदी की उस लकीर पर रख दे ।

प्रत्यवने जलं संकल्पम्—एक दीने में जल भरके संकल्प करे ।

अद्यामुक गोत्रस्य अमुक नाम प्रेतस्यः प्रथम दिननिमित्तक  
पिंडस्थाने कुशोपरि अवनेजलं ते मया ।

उस दीने का जल कुशा पर चढ़ावे ।

पुटपात्रं प्रत्यवने जलार्थं रक्षयेत्—पिंड पर जल चढ़ाने के लिये उस दीने को  
अपचे सोमचे रखले ।

**ज्येष्ठ पिण्ड दानम्**—अब बड़े पिण्ड का संकल्प करे ।

ॐ तत्सद्विष्णुर्विष्णुर्विष्णु अद्येत्यादि० अद्यामुक गोत्रस्य  
अमुकनाम प्रेतस्य० प्रथम दिननिमित्तक रौरव नाम नरको-  
त्तारणाय ब्रह्मरूपाय मूर्द्धा संभूत्यै एषः पिण्डस्ते मया दीयते० ॥

उस पिण्ड को वेदों की कुशा के बीच में रखे ।

**यमपिण्डः**—इसके बाद छोटे पिण्ड का संकल्प करे ।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य० प्रथम दिननिमित्तक  
प्रेतरक्षणार्थाय यम किंकरपिण्डस्ते० ॥

इस पिण्ड को बड़े पिण्ड से मिलाकर अपने आगे रखदे और हाथ जोड़े ।

**मन्त्र**—यमस्य किंकरा घोरा पास मुग्धर धारिणः ।

तेन मया प्रेतार्थाय पिण्डो यमदीयते मया ॥६॥

दणगात्र कर्म

३७

**स्वान पिण्ड संकल्पः**—अब पेड़े वाले पिण्ड का संकल्प करे ।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य० प्रथम दिननिमित्तक  
प्रेतरक्षणार्थाय एषः स्वान पिण्डस्ते० ॥

इस पेड़ को बड़े पिण्ड के आगे मिलाकर रखदे और हाथ जोड़े ।

**मन्त्र**—द्वौ स्वानो स्याम सबलों वैवस्वत कुलोद्भवौ । ताभ्यामन्नं  
प्रदास्यामि म्यातामेता वहिंसकौ ॥७॥

**प्रत्यवने जलम्**—पहिले दोने में जल भरकर संकल्प करे जो कि सामने रक्खा है । संकल्प—

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य० प्रथम दिननिमित्तक  
पिण्डोपरि प्रत्यवने जलं ते मया० ॥

दोने का जल बड़े पिण्ड पर चढ़ावे ।

**गंधादि दानम्**—बड़े पिण्ड के ऊपर सब सामग्री पान पर रखकर चढ़ावे और धी का

दीपक जलावे राल की धूप दे । संकल्प—

अद्यामुक्कगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य० प्रथम दिननिमित्तक  
पिंडोपरिमधूरणा, सूत्रं, उशीर, चन्दन, तिलांश्रतानि,  
भृङ्गराज, पुष्प, दुर्गन्धिनिवारणार्थं, सरजरस धूपं, तिमिर  
निवारणार्थं दीपं, नैवेद्यं, ताम्बूल, पुं गीफल, कमलाक्षं एतानि  
गन्धादिनी ते मया दीयन्ते तवोप्रतिष्ठन्ताम् ॥

अन्नंमज्जलम्) एक दौने में अन्न, एक दौने में जल भरके पिंडों के आगे धरे । संकल्प—

अद्यामुक्कगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य० प्रथम दिननिमित्तक  
क्षुधा तृषा निवारणार्थं ग्रास मात्रमन्न शीतल जल ते मया  
दीयते० ।

दशगात्र कर्म

३९

(त्रिकुटीद्वयं) तीन-तीन लकड़ियों की दो त्रिकुटी बनाकर दाईं ओर बाईं ओर खड़ी  
करके दाईं पर जल और बाईं पर दूध का दौना भर कर धरे । संकल्प—

अद्यामुक्कगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य० प्रथम दिननिमित्तक  
पिंडोपरि नीरक्षीर पात्रेदाहा तृषा निवारणार्थं ते मया दीयते  
तवोप्रतिष्ठन्ताम् ॥ त्रिकुटी पर धरे हुए दोनों दौनों को सीधे हाथ का अंगूठा लगा  
कर दूध और जल को बतावे और नीचे लिखा मन्त्र पढ़े ।

श्मशानानल दग्धोसि परित्यक्तोसि बांधवैः इदं नीर मिदं क्षीरं  
मन्त्र स्नायि मिदं पिवः ॥८॥

(अनेन मन्त्रेण पिंडोपरि द्वे अर्धसिचयेत्) ऊपर का मन्त्र पढ़कर पहले  
जल फिर दूध का दौना बड़े पिण्ड पर चढ़ाके बाईं ओर रखता जावे ।

(तिल मिश्रितं नीरक्षीर पात्राणि नित्यं प्रति द्विगुणं कृत्वा)



पहले दिन के पिण्ड पर १ जल और १ दूध का, दूसरे दिन के पिण्ड पर २ जल और २ दूध के, इसी तरह रोज दुगने करके दोने चढ़ावे ।

(पुनः अञ्जलियः) फिर थाली में जल भरके उसमें गंगा जल, तिल, दूध मिलाकर संकल्प करे । संकल्प—

अद्यामुक्कगोत्रस्य अमुक्कनाम प्रेतस्य० प्रथम दिननिमित्ताक दाहार्तिषमनार्थं एका वृद्ध्या तिल तोयाञ्जलि ते मया दीयते तवोप्रतिष्ठताम् ॥

संकल्प का जल अंगूठे की ओर को पिण्ड पर चढ़ावे फिर दोनों हाथ से पहले दिन के पिण्ड पर २, दूसरे दिन के पिण्ड पर ४, तीसरे दिन वाले पर ६, इसी तरह रोज दो अधिक करके चढ़ावे ।

(पुनः काक पिण्डम्) - फिर मुट्ठी बंधा हुआ काग पिण्ड हाथ में लेकर संकल्प करे । संकल्प—

दशगात्र कर्म

अद्यामुक्कगोत्रस्य अमुक्कनाम प्रेतस्य० प्रथम दिननिमित्ताक प्रेतरक्षणार्थाय एषः पिण्डरते मया दीयते ॥

इस पिण्ड को पीछे फेंक दे । (प्रार्थना) फिर हाथ जोड़कर यह मन्त्र पढ़े—

काकोसि यमदूरोसि गृहाण बलिमुत्तमम् । यमद्वार गतप्रेत त्वमाय्यायमतुर्हसि ॥६॥

(सव्यंपूर्वाभिमुख पिण्डप्रतिष्ठासंकल्प) जनेऊ और अंगोछा बायें कन्धे पर कर पूरब की मुंह करके एक पैसा लेकर संकल्प करे ।

अद्येत्यादि० अद्यामुक्कगोत्रस्य अमुक्कनाम प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तये अभीष्ट लोका वाप्तये प्रथम दिननिमित्ताक पिण्ड प्रतिष्ठार्थं ताम्रमर्क देवतम् यथानाम गोत्राय महाब्राह्मणाय कृते तत्त दक्षिणा तुभ्यमहं संप्रददे ॥

महाब्राह्मण को दे अगर महाब्राह्मण नहीं मिले तो ऐसा कहे—(दातुमहमुत्सृजे)

**पुनः ध्यानम्**—हाथ जोड़कर भगवान का ध्यान करे। यह मन्त्र पढ़े—

**अनादि निधनोदेवः शंखचक्र गदाधरः। अक्षय पुण्डरीकाक्षः**  
**प्रेत मोक्षाप्रदो भव ॥१०॥ अतमी पुष्प संकाशं पीतवाससं**  
**समन्वितम्। धर्मराज नमस्तवां वै प्रेत मोक्षाप्रदो भव ॥११॥**

**अपसव्यं दक्षिणाभिमुख पातित वाम जानू**—जनेऊ, अंगोछा सीधे कन्धे पर कर दक्षिण को मुंह करके बायां घुटना नीचा करे।

**अच्छिन्न जलधारा संकल्पं कुर्यात्**—अधिक जल चढ़ाने का संकल्प करे।

**अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य० प्रथम दिननिमित्तक**  
**दाहार्तिषमनार्थं पिण्डोपरि अच्छिन्न जलधारा ते मया दीयते**  
**नवोपतिष्ठताम् ॥**

दशगात्र कर्म

४९

घड़िया बायें हाथ में उठाकर सीधे हाथ के अंगूठे की ओर की बड़े पिण्ड पर जल चढ़ावे।

**पिण्ड विसर्जनम्** पिण्ड को यहां से विदा करे और हाथ जोड़कर यह मन्त्र पढ़े।

**इह लोके परित्यज्य जातोमि परमांगतिं मनसा।**

**वायु रूपेण कुशेत्वां यो जयाम्यहम् ॥१२॥**

थाली को अपने आगे रखके पिण्ड के नीचे की कुशा को निकालकर थाली के बीच में रखे, बड़े पिण्ड को दोनों हाथ से उस कुशा के ऊपर रखे, छोटे पिण्ड को पीछे, पेड़े को आगे, दीपक, भोजन और सब सामग्री को थाली में रखकर उन सबको जल में सिलावे पहिले दिन जिसके पिण्ड बनावे, दस दिन तक उसी के पिण्ड बनाने चाहियें और एक ही जगह रोज सिलावे।

**षट् त्रिंशत् घट दानम्**—दोनों घड़ियों में ३६ लोटे जल के गिनकर भरे दो पिण्ड हों तो दुगने लोटे भर कर हिसाब लगाये कि कितनी जोट हुई। घड़ियों में जरा २ सा दूध, तिल डाले, फिर जल लेकर संकल्प करे।

**अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य० प्रथम दिननिमित्तक**

प्रेत रक्षणार्थाय दाहा तृषा निवारणार्थमश्वत्थमूले षट त्रिपत्  
कर्म पात्रकमण्डल मितं जल ते मया दीयते तवोप्रतिष्ठताम् ॥

संकल्प का जल पीपल की जड़ में छोड़ दे और हाथ जोड़े ।

मन्त्र—अश्वत्थ पुण्य वृक्षोसि वासुदेव जगत्पते ।

प्रेतस्य जल दानेन तृप्ति भवति शाश्वती ॥१३॥

इसके बाद घड़िया लेकर सीधे हाथ के अंगूठे की ओर से पीपल की जड़ में जल चढ़ावे  
जितनी घड़िया गिनती में हों, थोड़ा-थोड़ा दूध और गंगा जल सब में डालता जाय ।

पुनः षट छेदनं कृत्वा—एक घड़िया में बारीक सा छेद करके उसमें जड़ की ओर  
से कुशा लगाकर उसमें तिल, दूध, गंगाजल डालकर जल भरे और संकल्प करे ।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य० अद्यघस्त्रादारन्य दशम  
दिन पर्यंतमश्वत्थमूले अचिच्छन्न जल धारा ते मया दीयते

दशगात्र कर्म

तवो प्रतिष्ठताम् ॥

संकल्प का जल पीपल की जड़ में छोड़कर पीपल में छींका बांधकर घड़िया रखे जिसमें  
से जल की एक-एक बूंद पीपल की जड़ में पड़ती रहे । स्नान करके या हाथ पाँव धोकर  
कर्म की धोती पहने ।

सव्यं पवित्री धार्य्य पूर्वोक्त मन्त्रप्रमाणं—अंगोछा, जनेऊ बायें कन्धे पर  
करके कुशा की पवित्री पहने, पहले मन्त्र के अनुसार पूरब को हाथ जोड़कर यह मन्त्र पढ़ें—

शान्ताकारं० अपसव्यं भोजनार्थमन्न पत्तल संकल्पम् ।

अंगोछा, जनेऊ सीधे कन्धे पर करके दक्षिणा को मुंह करके जल, तिल, पैसा लेवे ।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य० प्रथम दिननिमित्तक  
इदमन्नं भोजनार्थं यमकिंकर भाग सहितम् तत्प्रतिष्ठार्थं  
ताम्रमयो दक्षिणा सहितम् ते मया दीयते तवोप्रतिष्ठताम् ॥

**गौग्रासम्**—एक रोटी पर सब चीजें रखके गाय को दे और उसके हाथ लगावे ।

सौरभे या सर्वहिता पवित्रा पुण्य राशयः ।

प्रतिगुह्यं तुमेग्रासः गावस्त्रैलोक मानरः ॥१४॥

**इदमन्नं गवे नमः ।**

**स्वान ग्रासः**—आधी रोटी पर सब चीज रखके कुत्ते के लिये घरे और उसके हाथ लगावे ।

**मन्त्र**—द्वौस्वानौश्याम सवर्लो वैवस्वत कुलोद्भवौ ।

ताभ्यामन्नं प्रदास्यामी श्याता मेता वहिंसकौ ॥१५॥

**इदमन्नं स्वानाय नमः ।**

**काक ग्रासः**—आधी रोटी पर सब चीजें रखके कौए के लिये रखे और उसके हाथ लगावे । यह मन्त्र पढ़े—

दशगात्र कर्म

४१३

इन्द्र वारुण वायव्या याम्या नैऋत्य कास्तथा ।

वायम प्रति गृह्णंतु भूमावन्नं मयांपितम् ॥१६॥

**इदमन्नं काकाय नमः ।**

**(सव्यं प्रार्थना)**—अंगोछा, जनेऊ बायें कन्धे पर रखके पूर्व को हाथ जोड़े ।

**मन्त्र**—अनादि निधनो देव ॥१७॥ अतसी पुष्प संकाशं ॥१८॥

इसके बाद पत्तल और पैसा महाब्राह्मण को देवे । यदि महाब्राह्मण न हो तो गौ को खिलादे । गौ की रोटी गौ को, कुत्ते की रोटी कुत्ते को, कौए की रोटी कौए को दे दे । कर्म की धोती निकालकर धुलवादे, फिर आप भोजन करे ।

**(निशामुखे दीपं अश्वत्थ मूले प्रज्वाल्य)**

सायंकाल पीपल की जड़ में तेल का दीपक जलाये, घड़िया बन्धे हुए स्थान पर जाकर न्हावे या हाथ मुंह धोके कुल्ला करके कर्म की धोती पहनकर अंगोछा, जनेऊ बायें कन्धे पर रखके घड़िया में जल भरे और तिल भी डाल ले और पूर्व को इस मंत्र से हाथ जोड़े—



**शान्ताकारं भुजंगशयनमिति ०**—इस मन्त्र को पूरा पढ़े ।

**अपसव्यं** अंगोछा, जनेऊ सीधे कन्धे पर करके दक्षिण को मुंह करके बायां गोडा नीचा कर घड़िया में से जल लेकर संकल्प करे ।

**अद्यामुकगोत्रस्य अमुकनाम प्रेतस्य ० प्रथम दिननिमित्तक निशामुखे यमपथि महामार्गे महादुर्गमयकुमार्गाधकर निवारणायमिलमिश्रितेन तैलेन, पूरीतं प्रज्ज्वलितं दीप ते मया दीयते तवोप्रतिष्ठताम् ॥**

हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे ।

**मन्त्र—यमद्वारे महाघोरे महता तमसो वृते । तत्तमोनाश  
नार्थाय दोषोयं दीयते मया ॥१६॥**

दशगात्र कम

४९

**सव्य प्रार्थना—**अंगोछा, जनेऊ बायें कन्धे पर करके पूर्व को हाथ जोड़े ।

**मन्त्र—अनादि निधनो देवः शंखचक्र गदाधरः । अक्षयः  
पुण्डरीकाक्षः प्रेत मोक्षप्रदो भव ० ॥२०॥**

**अतसी पुष्प संकाशं दीपसहितं धर्मराज नमस्तुभ्यं  
प्रेत मोक्षप्रदो भव ॥२१॥**

जिस रीति से पहले दिन का पिण्ड किया है उसी प्रकार नौ दिन तक करे परन्तु बड़े पिण्ड के संकल्प में अन्तर है सो नीचे सब संकल्प लिखे हैं और इसी तरह से सायंकाल दीपक जलाये, पहले दिन के संकल्प में प्रथम दिन कहे और दूसरे दिन के संकल्प में द्वितीय दिन कहे, इसी तरह दस दिन तक कहे । जहां कहीं दो चार चीजें पिण्ड में चढ़ती हों तो उस संकल्प में (प्रतिष्ठन्ताम्) ऐसे कहे ।

**॥ इति प्रथम दिन कृत्य सम्पूर्ण ॥**

१—अद्यामुक गोत्रस्य अमुक नाम प्रेतस्य प्रथम दिने रोक्व  
नाम नरकोत्तारणाय ब्रह्म रूपाय शिरः पूर्णाय एषः  
पिण्डस्ते मया दीयते तवो प्रतिष्ठताम् ।

२—द्वितीये दिने पुण्य नाम नरकोत्तारणाय विष्णु रूपाय ।  
अक्षि करण नासिका सम्भूत्यै एषः पिण्डस्ते मया० ॥

३—तृतीया दिने अमेढ्यनाम नरकोत्तारणाय ब्रह्म रूपाय ।  
भुजबक्षी ग्रीवा सम्भूत्यै एषः पिण्डस्ते मया दीयते० ॥

४—चतुर्थ दिने तामिश्रनाम नरकोत्तारणाय वायु रूपाय ।  
उदरनाभि गुदवस्ति मेढ्य सम्भूत्यै एषः पिण्डस्ते मया० ॥

दशगात्र कर्मा

५१

५—पंचम दिने अंधता मिश्रनाम नरकोत्तारणाय रुद्र रूपाय ।  
उरुजानु जंघा चरण सम्भूत्यै एषः पिण्डस्ते मया दीयते० ॥

६—षष्ठ दिने संभ्रम नाम नरकोत्तारणाय रुद्र रूपाय ।  
निखिलांग प्रत्यंग मर्म सम्भूत्यै एषः पिण्डस्ते मया० ॥

७—सप्तम दिने अमेढ्य क्रमी नाम नरकोत्तारणाय सर्व ।  
नाडिका पूरणाय एषः पिण्डस्ते मया दीयते तवोप्रति० ॥

८—अष्टम दिने पुरीषभक्ष नाम नरकोत्तारणाय सोम रूपाय ।  
नख दन्त रोम केश पूर्णाय एषः पिण्डस्ते मया दीयते ॥

९—नवम दिने कुम्भीपाकनाम नरकोत्तारणाय अग्नि रूपाय ।

बल वीर्य पूर्णाय एषः पिण्डस्ते मया दीयते तवा० ॥

१०—दशम दिने कुम्भीपाक नाम नरकोत्तारणाय इन्द्र रुपाय ।  
क्षुत्पिपासादि षडुर्मी पूर्णाय एषः पिण्डस्ते मया दीयते ॥

॥ इति दशगात्र कर्म समाप्तम् ॥

सामग्री—सुवारी १०, कमल गट्टे १०, भंगरा, फूल २, घड़िया २, सराई ४, कुशा, लाल चन्दन, पान, राल, शहद, सूत, तिल, नख, ऊन, धो, मीठा, दोने ढाक के १५, खस, रुई, दियासलाई १, दक्षिणा, पेली मिट्टी १ सेर या गंगारज, गंगा जल, चाकू, गौ का दूध, छींका रस्सी का १, लोटा १, कटोरा १, कुशा का आसन १ ।